

गुण, रंग, स्वाद आदि गुणों का आ जाना पुं. वैश्यों की एक जाति विशेष।

लोहार पुं. (तद्.) लौहकार, लोहे का सामान या वस्तुएँ बनाने वाली जाति स्त्री. लोहारिन।

लोहारखाना पुं. (तद्.+फा.) लोहे का काम करने का स्थान, लोहे का सामान बनाए जाने वाला स्थान।

लोहारी स्त्री. (देश.) 1. लोहार का काम 2. लोहे की वस्तुएँ बनाने का काम या पेशा।

लोहा-सारंग पुं. (तद्.) एक पक्षी जो लगलग की जाति का होता है, विशेष लगलग बेढंगी शकल का लंबी गरदन और पैरों वाला गिद्ध से भी बड़े आकार का होता है, उसके काले पंख, लाल चोंच और शेष शरीर सफेद होता है।

लोहित वि. (तद्.) 1. लाल रंग का 2. ताँबे से बना हुआ 3. रक्तम, लाल उदा. 1. गगन था कुछ लोहित हो चला- हरिऔधः प्रियप्रवास पुं. 1. लाल चंदन 2. लाल रंग 3. साँप 4. मंगल ग्रह 5. पलकों से संबंधित एक रोग 6. ब्रह्मपुत्र नदी 7. रक्त 8. एक प्रकार का हिरण 9. गौतम बुद्ध का एक नाम 10. केसर 11. ताँबा।

लोहितक पुं. (तद्.) 1. पद्मराग या काल के समान एक प्रकार का घटिया रत्न, चुन्नी 2. फूल नामक धातु (काँसे से मिश्रित धातु) 3. मंगल ग्रह 4. वर्तमान रोहतक नगर का प्राचीन नाम।

लोहित-चंदन पुं. (तद्.) 1. लाल चंदन 2. केसर।

लोहित-मृत्तिका स्त्री. (तद्.) गेरू।

लोहित-सागर पुं. (तद्.) अफ्रीका और अरब के मध्यका वह सागर जो पूर्व में भूमध्य सागर से अलग था पर वर्तमान में स्वेज नहर बन जाने से उससे मिल गया है, लाल सागर। red sea

लोहितांग पुं. (तद्.) 1. मंगल ग्रह 2. कांपिल्ल वृक्ष।

लोहिताक्ष पुं. (तद्.) 1. एक तरह का सर्प 2. काँख, कोख 3. नितंब 4. विष्णु 5. कोमल।

लोहिताक्षक पुं. (तद्.) एक सर्प (साँप) विशेष।

लोहिताश्व पुं. (तद्.) 1. अग्नि 2. शिव।

लोहितिमा स्त्री. (तद्.) 1. रंग में लोहित होने की अवस्था या भाव 2. लालिमा, लाली, अरुणिमा।

लोहितोद पुं. (तद्.) एक नरक।

लोहित्य पुं. (तद्.) 1. पुराणों के अनुसार कुश द्वीप के पास स्थित एक समुद्र 2. एक प्राचीन बस्ती या जनपद स्त्री. ब्रह्मपुत्र नदी।

लोहिनी स्त्री. (तद्.) वह स्त्री जिसका लाल वर्ण हो वि. लाल वर्ण वाली।

लोहिया पुं. (तद्.) 1. लोहे के सामान का व्यापारी आदमी, लोहे का रोजगार करने वाला व्यक्ति 2. लाल रंग का बैल 3. राजस्थानी वैश्यों की एक जाति (उपजाति) वि. 1. लोहे का बना हुआ 2. लाल रंग का।

लोही वि. (तद्.) 1. लाल रंग का, सुर्ख 2. रक्त स्त्री. प्रभात के समय की लाली या लालिमा 3. लोई, ऊनी, चादर।

लोहू पुं. (तद्.) रुधिर, रक्त, खून मुहा.- लोहू का घूँट पीना या पीकर रह जाना- क्रोध रोक लेना, अनुकूल परिस्थिति न होने पर आवेश पर काबू करना।

लोहे की स्याही स्त्री. (तद्.) शीरे में लौह-चूर्ण का खमीर उठाकर बनाई जाने वाली काले रंग की रंगीन स्याही जो कपड़ों की छपाई या रंगाई के काम आती है।

लोहे के चने पुं. (तद्.) एक बहुत श्रमसाध्य, दुष्कर एवं अत्यधिक कठिन कार्य मुहा.- लोहे के चने चबाना- अत्यंत दुस्साहस, कठिन और लगभग असंभव-सा कार्य करना।

लोहोत्तम पुं. (तद्.) सोना, स्वर्ण।

लोह्य पुं. (तद्.) पीतल।

लौंकड़ा पुं. (देश.) अविवाहित युवक, कुंवारा, नौजवान जैसे- लौंकड़ा वीर हनुमान।

लौंकना अ.क्रि. (देश.) लौंकना, अवलोकन, दिखाई पड़ना या देना।

लौंग पुं. (तद्.) 1. लवंग-दक्षिणी भारत, जावा, मलाया आदि द्वीपों में अधिकता से पैदा होने वाला पौधा या बेल 2. उक्त बेल की वह कली जो अधखिली ही (खिलने से पूर्व ही) सुखा ली जाती है तथा उसे दवाओं, मसालों में सुगंधि तथा गुण आदि के निमित्त उपयोग में लाया जाता है 3.